eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 06, June 2023

बाबा नागार्जुन के उपन्यासों में लोकतात्त्विक चेतना

डॉ0 अरुण कुमार[1] , शाकरीन[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय रज़ा पी0जी0 कॉलेज, रामपुर, उ0प्र0 भारत
[2]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, राजकीय रज़ा पी0जी0 कॉलेज, रामपुर, उ0प्र0 भारत

Abstract

प्रगतिवादी कवि बाबा नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की सांस्कृतिक रीति–रिवाज, शोषित वर्ग, किसान, मज़दूर आदि की स्थिति को प्रमुखता से चित्रित किया है। उन्होंने साधारण जीवन व्यतीत करने वाले उपेक्षित असहाय लोगों का यथार्थवादी वर्णन किया है। नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विषमताओं को लेकर जनवादी चेतना का चित्रण हुआ है। नागार्जुन कवि होने के साथ–साथ एक श्रेष्ठ उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यासों में भारतीय जनजीवन की विभिन्न झाँकियां देखने को मिलती हैं। वह जनमानस से जुड़े हुए कवि हैं। इन्होने भारतीय किसानो के जीवन को, उनकी अनेक समस्याओं को अत्यन्त सशक्त ढ़ंग से चित्रित किया है।

मुख्य शब्द– अंधविश्वास, भिक्षावृति, ममता, अशिक्षा, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक विषमताएँ, यातनाएँ, भ्रष्टाचार, ऐतिहासिकता, लोकतत्त्व, सामान्य जीवन, स्त्री समस्याएँ, आँचलिकता आदि।

Introduction

बाबा नागार्जुन प्रगतिवादी विचारधारा के प्रमुख कवि हैं। नागार्जुन की ख्याति कवि और उपन्यासकार दोनों रुपो में रही है। संघर्षशील और क्रान्तिकारी चेतना उनके अनेक उपन्यासो में देखने को मिलती है। एक जनवादी उपन्यासकार होने के कारण बाबा नागार्जुन ने पूँजीवादी व्यवस्था के परिणाम स्वरुप अपसंस्कृति, पतनशील मूल्यों, सामाजिक विकृतियों, को बेनकाब किया। आम–आदमी के जीवन की त्रासदी का भी चित्रण जनवादी रचनाकार करता है। **समाज में जाति व्यवस्था ने सामाजिक विद्रूपता निर्माण की है**, जो हर जगह दिखाई देती है। बाबा नागार्जुन ने अपने उपन्यासों के माध्यम से अंधविश्वासों तथा सामाजिक रुढ़ियों का विरोध किया। नागार्जुन के उपन्यासों को पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि उन्होने उस समय की सभी सम–सामायिक समस्याओं को अपने उपन्यासों में वर्णित किया है। उन्होनें इन समस्याओं, कष्टों को स्वयं भी भोगा। बाबा नागार्जुन को मानव–जीवन को चित्र मात्र समझते हैं। और उसे वास्तविक रुप से वर्णित भी करते हैं। नागार्जुन ने अपने उपन्यासो में ग्रामीण जीवन की समस्याएँ दुःख–दर्द की कथा–व्यथा कही है। समाज में उपेक्षित रही नारी को भी उन्होने अपने उपन्यास का विषय बनाया। जन सामान्य की पीड़ा को बाबा ने आत्मसात किया। नागार्जुन मार्क्सवादी चेतना के कवि माने जाते हैं। जीवन पर्यन्त वह आम–आदमी को इन्साफ दिलाने के लिए अमानवीय व्यवस्था के खिलाफ लिखते रहे। बाबा नागार्जुन ने सामाजिक कुरीतियों, आडम्बरो का खुलकर विरोध किया।

सिंहावलोकन – बाबा नागार्जुन जैसे विराट प्रगतिशील व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय में अनेक पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, शोध–पत्र, लेख आदि प्रकाशित हो चुके हैं। जैसे– नागार्जुन की कविताओं में लोक संस्कृति–आराधना (शोध पत्र[1]), नागार्जुन का रचना संसार–विजय बहादुर सिंह (पुस्तक[2]), दबी दूब

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 06, June 2023

का रुपक–कमलानंद झा पुस्तक[3], नागार्जुन का गद्य साहित्य–डॉ0 आशुतोष राय (पुस्तक[4]), नागार्जुन रचनावली–शोभाकांत (पुस्तक[5]) आदि। मेरे द्वारा लिखे गये प्रस्तुत शोध में नागार्जुन के उपन्यासों में लोकतात्त्विक चेतना का समुचित अध्ययन एवं अनुशीलन करने का सप्रयास किया जाएगा।

बाबा नागार्जुन के उपन्यासों में लोकतात्त्विक चेतना – बाबा नागार्जुन एक जनवादी चेतना के कवि एवं उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास सामाजिक जीवन के विभिन्न अंशो को उजागर करते हैं। सामाजिक विषमताओं के प्रति विद्रोह की भावना उनकी जनवादी रचनाओं का स्वर रही है। उन्होंने शोषित, पीड़ित, श्रमिक, मजदूर तथा निम्न वर्ग के लिए अपना अलग जनवाद बनाया। उस युग के समाज का इतिहास उनके उपन्यासो में प्राप्त होता है। निम्न वर्ग के लोगों के प्रति उनकी गहरी आस्था प्रकट हुई है। भारत के गाँवों को ही बाबा नागार्जुन ने अपने उपन्यासों का विषय बनाया जो उन्होंने स्वंय जो महसूस किया उसी को अपने लेखन कार्य के माध्यम से प्रकट किया। **उन्होनें ज़िंदगी की खुली पुस्तक से आँखिन देखी सीखा और वही ईमानदारी से लिखा**। उनके ह्रदय में पीड़ित, शोषित, किसानो के प्रति गहरी सहानुभूति है। उनकी लेखनी विषमताओं, रुढ़ियों और आडम्बरों के विरुद्ध जमकर चली।

नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में बिहार प्रान्त के मिथिलांचल का जन–जीवन वहाँ की समस्याओं आदि को प्रतिविधित किया है। उनके अनेक उपन्यास हें जो मिथिलांचल की पृष्ठभूमि को लेकर लिख गए हैं। जैसे– रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, कुम्भीपाक, उग्रतारा, दुःखमोचन आदि।

इन उपन्यासो में बाबा नागार्जुन ने भारतीय समाज के अनेक रीति–रिवाजों, रुढ़ियों, परम्पराओं, अंधविश्वासो, जाति–पाति के भेदभाव आदि को चित्रित किया है।

रतिनाथ की चाची – नागार्जुन का यह आंचलिक उपन्यास है। इसका प्रकाशन 1948ई0 में हुआ। इस उपन्यास की मुख्य कथा गौरी से संबंधित है जो एक विधवा समस्या के रुप में चित्रित है। इस उपन्यास में किसानों का संघर्ष, जयनाथ का घर छोड़कर इधर–उधर भटकना, तथा चाची की ग्राम सेवा आदि घटनाओं का उल्लेख आया है। चाची एक मध्यवर्गीय परिवार में जन्मी थी। उसके पिता को कुलीनता का मोह था। जिसके परिणाम स्वरुप उन्होने गौरी का विवाह एक कुलीन किन्तु अनेक रोगों से पीड़ित दरिद्र ब्राहमण से कर दिया। गौरी की ससुराल में गरीबी थी। उसे उसका भी सामना करना पड़ा था। वह देवर से प्रेम के चलते गर्भवती हुई तो मिथिला के पिछड़े सामन्ती समाज में हलचल मच गई गर्भपात के बाद तिल–तिल कर वह मरी। **इस उपन्यास का कथन है** –

"चाची गर्भपात कराने के लिए अपनी माँ के घर गई। उसके मुख पर कालिख पुती हुई थी। चाची को मालूम था कि उसकी माँ सरल शीतल स्वभाव की हैं और वह इस मुश्किल समय में चाची का साथ जरुर देंगी।चाची को इस बात पर बहुत भरोसा था।"

इस उपन्यास में अनेक कठिनाईयों को सहते हुए नारी का चित्रण किया है। बाबा नागार्जुन इस उपन्यास में कहना चाहते हैं कि जिस समाज में कुलीनता के नाम पर लड़कियों को बेचकर जीवन यापन किया जाता है तो इसका मूल कारण समाज की कमजोर आर्थिक स्थिति है। नागार्जुन

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 06, June 2023

के पात्रो में मानव के जीवन के सहज और सरल स्वभाव का सुन्दर चित्रण मिलता है। उनके उपन्यासों में मनुष्य को उसके वातावरण परिवेश को उसकी यंत्रणाओं एवं पीड़ाओं को यथार्थ रुप में चित्रित किया जाता है। उच्च वर्ग के अत्याचारो तथा विलासितापूर्ण जीवन के विरोध में कवि की कल्पना नही बल्कि भोगा हुआ यथार्थ है। नागार्जुन ने स्वंय आम आदमी होने के कारण साधारण जनसमूह के जिस दर्द को देखा शोषण अत्याचार को भोगा **उसके कारण वह प्रगतिवादी चेतना के प्रमुख कवि बने**। (1)

बलचनामा – स्वाधीनता के बाद जनवादी चेतना से ओत–प्रोत प्रधान उपन्यास की परम्परा को आगे बढ़ाने में नागार्जुन के इस उपन्यास ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

इस उपन्यास ने सामान्य–जन में नई चेतना जगाने का काम किया है। इस उपन्यास में भूमिहीन किसानों की व्यथा उनकी पीड़ा दुःख दर्द को व्यक्त किया गया है। बलचनमा उपन्यास का एक ऐसा गरीब पात्र है जो हर तरह के शोषण दमन और अत्याचार का शिकार है। जो हर प्रकार से उपेक्षित और तिरस्कृत है। इस उपन्यास में बलचनमा और उसका माँ दिन भर काम करती है लेकिन शाम को भर पेट खाने की व्यवस्था नहीं कर सकते। इसलिए मालिक के घर का जूठन खाकर अपना जीवन–यापन करता है। इस उपन्यास में दिखाया गया है कि कि किस प्रकार पूँजीवादियों द्वारा आम–आदमी का शोषण किया जाता है। जनवादी रचनाकार अपने लेखन कार्य में सामाजिक विसंगतियों का उदघाटन करते हैं जिसके अन्तर्गत नैतिक पतन, टूटते बिखरते परिवार, अलगाव, अजनबीपन, अमानवीयता, व्यवस्था की साजिशें, अादि समस्याओं की मार का चित्रण करता है। समाज में बलात्कार हत्याएँ जैसी दुर्घटनाएँ किस प्रकार बढ़ रही हैं, आदमी किस प्रकार से डरा हुआ है, घबराया हुआ है अविश्वास बढ़ता जा रहा है, आदि बातों का वर्णन जनवादी चेतना का रचनाकार ही कर सकता है।

बाबा नागार्जुन का उपन्यास बलचनमा में भी इसी प्रकार की अभिव्यक्ति हुई हैः–

''ये जमींदार गरीबों की इज़्ज़त को लूटते हैं नैतिक अद्यापतन इस व्यवस्था से उत्पन्न होता है। गरीबों को इसका शिकार होना पड़ता है। इसका कारण उनकी गरीबी है। बलचनामा के मुख से बाबा नागार्जुन बहते हैंः– गरीबी नरक है भैया, नरक। चावल के चार दानें छींट कर बहेलिया जैसे चिड़ियों को फंसाता है, उसी प्रकार ये दौलत वाले गरजमन्द औरतों को फँसा मारते हैं।'' (2)

स्वातन्त्र्योत्तर उपन्यासों में बहुमुखी प्रतिभा को प्रस्तुत करने वाले नागार्जुन एक सरल व्यक्तित्व के कवि हैं। घुट–घुट कर जीवन जीते हुए आम–आदमी की त्रासदी का सशक्त चित्रण एक जनवादी रचनाकार ही कर सकता है। राजनीति से अलग रहना जनवादी साहित्यकार को मान्य नही है। वे राजनीति के कटु चालों का विरोध कर जनता के हित का शासन लाना चाहते हैं।

नई पौध – इस उपन्यास का प्रकाशन 1953 में हुआ। नागार्जुन की यह सबसे नई रचना है। बे–मेल शादियों का वर्णन इस उपन्यास का मुख्य विषय बन गया है और इसका समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। इसका कथानक पुराना है, फिर भी रचनाकार ने नए अनुबंध, नई परिस्थितियों तथा नये वातावरण में उसे चित्रित करके मौलिक रुप में प्रस्तुत किया है। इस उपान्यास में नागार्जुन ने भारत देश की नयी फसल अर्थात नई पीड़ी की शक्ति को पहचाना है। यह नई पौध अन्याय का प्रतिकार करती है। नागार्जुन ने इसके माध्यम से गाँवों में नई चेतना को, नई संस्कृति, रीति रिवाजो को

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 06, June 2023

अभिव्यक्त किया है। अब गाँवों में अनमेल विवाह जैसी समस्याएँ उत्पन्न नहीं होंगी। इस सामाजिक समस्या को मुख्य रुप से अपनाया गया है। लोक जीवन में इतना बदलाव लेखक ने स्थापित कर दिया है कि उसकी रचना इससे ओत–प्रोत होती हुई दिखायी देती है। **इस उपन्यास का एक कथन है**:–

''बामपार्टी के नेता दिगम्बर के पत्र से (बिसेसरी जिसका विवाह बूढ़े से हो रहा है) को राहत मिलती है और वह धैर्य धारण करती है। चौदह–प्रन्द्रह वर्ष की उम्र में उसे काफी समझदारी आ गई थी प्राइमरी तक शिक्षा प्राप्त करने के कारण वह बड़ी निपुणता से बातचीत करती है। अन्त में उसका विवाह वाचस्पति झा जैसे प्रगतिशील विचारों के नव युवक से होने पर वह अपने आप पर मुग्ध और प्रसन्न है।'' (3)

विश्वास और अंधविश्वास के रुप को देखते हुए दूसरे पक्ष से पीछे रह जाता है। तब लोकजन की मनोवृत्तियों व्यवहारों पर इसका प्रभाव पड़ता है। नागार्जुन के गँवई जीवन और लोक संस्कृति विषयक उनकी चेतना इसी सत्र के सहारे आगे बढ़ती है। नई पौध उपन्यास की कहानी भी मिथिलांचल से जुड़ी है जिसमें गाँव के बड़े–बूढ़ों की दकियानूसी विचार–धारा को तोड़कर तरुणों ने एक लड़की के जीवन को चौपट होने से बचा लिया हमारे ग्रामीण जीवन में ऐसी विकराल समस्याएँ आज भी मौजूद हैं। इसका समाधान नई पीढ़ी ही दे सकती है। इस उपन्यास में आर्थिक तंगी को चित्रित किया गया है। जिसके कारण 15 वर्षीय विसेसरी का विवाह 60 वर्षीय चतुरानन चौधरी नौ सौ रुपये में सौदा पटाकर अपने गाँव ले आते हैं।

बाबा बटेसरनाथ – सन् 1954 ई0 में प्रकाशित नागार्जुन का उपन्यास सर्वहारा वर्ग की जागृति संगठन और संघर्ष का इतिहास है। इस उपन्यास में बाबा बटेसर नाथ रुपउली के सौ वर्षो का इतिहास जयकिसन को सुनाता है। इसमें बिहार के दरभंगा की एक बस्ती है। रुपउली के अंचल को वर्ण विषय बनाया गया है। गाँव के बाहर एक बड़े मैदान में सौ वर्षो से भी अधिक पुराना एक बरगद का पेड़ है। गाँव के लोग उसे बाबा बटेसर के नाम से पुकारते हैं।

रुपउली गाँव के चार पीड़ियों की कथा उस उपन्यास में चित्रित की गई है। यहाँ वटवृक्ष अपने जन्म से दस पन्द्रह दिन तक की वैयक्तिक अनुभूतियों का वर्णन करता है।

पूँजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत गाँवों में किसानों पर जमींदारों, महाजनो और सरकारी अफसरों द्वारा किये जाने वाल अन्याय, अत्याचार आदि का मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।

पुलिस किस प्रकार गाँव में गरीबों पर अन्याय करती है। इसका भी वर्णन इस उपन्यास में किया गया है। बाबा बटेसर जैकिसुन से कहता है कि जमींदारों ने सार्वजनिक भूमि, तालाबों और वृक्षों पर अवैध कब्ज़ा कर लिया है। इस शोषण के विरुद्ध गाँव में राजनीतिक चेतना पनपने लगती है। युवा जो नेता हैं, वे किसानों को संगठित करते जमींदारों के खिलाफ़ लड़ने की तैयारी करते हैं। ये साम्यवदी चेतना के प्रतीक हैं। उपन्यासकार नागार्जुन ने किसान संघर्ष के साथ–साथ पूँजीवादी कानून, न्याय, पुलिस आदि के व्यवहार को भी उजागर किया है। इस प्रकार बाबा नागार्जुन ने इस उपन्यास के द्वारा जमींदारों के विरुद्ध किसानों के एकजुट जनवादी चरित्र को अंकित किया है। इस

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 06, June 2023

उपन्यास में किसान विजयी होकर स्वतन्त्रता, शान्ति, प्रगति की पताका फहराते हुए दिखाई देते हैं। पुलिस के व्यवहार को इस उपन्यास में इस प्रकार चित्रित किया गया है। इसके बारे में स्वतः बाबा नागार्जुन का कथन दृष्टव्य हैः–

''जहाँ अदालत जमींदारों के हित में फैसला मुल्तवी करती है। वहीं दूसरी ओर पुलिस लोग बहाने बनकर किसानो के घर दावतें उड़ाते हैं।''(4)

नागार्जुन ने यहाँ पर सरकारी अफसरों और नेताओं पर करारा व्यग्य किया है। उनके स्वार्थ परक चरित्र को उजागर किया है।

आम आदमी के प्रतीक रुप में बाबा बटेसरनाथ हैं, जिन्होने किसानों, मजदूरों में जनवादी चेतना जगाने का काम किया है। इस उपन्यास में वटवृक्ष का मानवीकरण किया गया है। बरगद के पेड़ को मानव के रुप में स्वीकार किया गया है। ऐसा करके नागार्जुन ने एक नए कथाशिल्प का प्रणयन किया बाबा बटेसरनाथ जो इतिहास का ज्ञाता है उसे जनसामान्य के प्रति गहरी आस्था है। उसे जमींदारों, नेताओं से घृणा है। किसानो मजदूरों के प्रति उसके हृदय में न केवल सहानुभूति है बल्कि उनका कल्याण भी करना चाहता है। **'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'** के विचारो से यह ओत–प्रोत हैं इस उपन्यास में एक पात्र है दयानाथ जो एक कर्मठ कार्यकर्ता है। मजदूरों, किसानों के हित में संघर्ष करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। गाँव में जब–जब गरीब किसानों और मजदूरों पर अत्याचार किया जाता है तब अत्याचार के खिलाफ लड़ने को तैयार रहते हैं। कई बार वह जेल भी गए। दयानाथ का कहना था कि :–

''गरीब का संकटमोचन वही होगा जो खुद गरीब के घर में पैदा हुआ होगा।''(5)

इस उपन्यास में आम आदमी का चित्रण अधिक हुआ है।

दुःखमोचन – सन् 1957 ई0 में प्रकाशित बाबा नागार्जुन का यह साम्यवादी विचारों से युक्त उपन्यास है। इस उपन्यास का मुख्य नायक दुःखमोचन है। इसमें टमका कोइली गाँव को पृष्ठभूमि में रखकर स्वातन्त्र्योत्तर नवनिर्माण के लिए ग्रामीण नवचेतना के किसान आन्दोलन का चित्रण किया है। दुखःमोचन कलकत्ते में रहकर व्यवसाय करता है। वहाँ पर पाँच साल रहने के बाद वह अपने गाँव वापिस आता है। वह गुणगान एवं नवचेतना से अनुप्राणित विधुर व्यक्ति है। उसके जीवन में अनेक सामाजिक विरोध, समस्याएँ आती हैं। वह एक धर्यवान व्यक्ति है।

इस उपन्यास में शोषण, अशिक्षा, दौलत का घमंड, पुरानी परम्पराओं, अंधविश्वास, नशा जैसी सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया गया है। ये समस्याएँ जनता की सामूहिक उन्नति और विकास के मार्ग में आने वाली अनेक रुकावटें थीं। दुःखमोचन पर गाँधीवाद का प्रभाव है। इस उपन्यास की कथा सरल और सरस है।

गाँव की उन्नति के लिए केवल उसकी भौतिकता को ही नही देखा गया बल्कि उसके निवासियों के मन भावनाओं और विश्वास को भी वर्णित किया गया है। दुःखमोचन उदारवादी और सुधारवादी व्यक्ति हैं जिसकी प्रेरणा से सारे गाँव में सुधार आता है। सरकारी योजनाओं द्वारा गाँव के विकास के

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 06, June 2023

लिए पैसा दिया जाता है। तो, रुढ़िवादी नेता स्व–विकास के लिए उपयोग में लेते हैं। दुःखमोचन का पूरा जीवन समाज के लिए समर्पित है। जैसे– राम सागर की माँ की मृत्यु पर दाह संस्कार के लिए लकड़ी देना, गेहूँ वितरण करवाना, श्रमदान के माध्यम से पथ निर्माण करना आदि। नागार्जुन ने दुःखमोचन को लोकनायक के रुप में प्रस्तुत किया है।

नागार्जुन की यह एक समाजवादी कृति है। दुःखमोचन एक व्यक्ति न रहकर एक टाईप बन गया। आम–आदमी का वर्णन इस उपन्यास में किया गया है। **''जहाँ कड़ी मेहनत मज़दूरी करके गुज़ारा करने वाले लोग रहते थे। ये कई जातियों के थे अच्छी हैसियत वाले थोड़े ही परिवार थे इनमें भूमिहीन की तादाद ज़्यादा थी।''** इससे ही पता चलता है कि यहाँ जीवन यापन करने वाले आम–आदमी ही ज़्यादा थे।

आम–आदमी के रुप में दुःखमोचन ही वर्णित है। दुःखमोचन विचारो से प्रगतिशील व्यक्ति है। कोलकाता जैसी महानगरी में वह रह चुका है। उसकी शिक्षा–दीक्षा ज़्यादा नहीं थी लेकिन उसने अपने जीवन के अनुभवों से बहुत कुछ सीखा था। निरंतर समाज के हित में कार्यो में लगे रहना, सच्चाई और ईमानदारी से समाज की सेवा करना, दुःखमोचन का दैनिक कार्य है। जब फोड़े फुंसियों की दवा ग्रामवासियों के लिए आती है तब मास्टर टेकनाथ कुछ दवा दुःखमोचन के घर ले आता है। लेकिन दुःखमोचन उस दवा को लौटा देता है। क्योंकि वह समझता है कि मुझसे ज्यादा ज़रुरत इस दवा की गाँव वालों को है। गाँव की रुढ़ीगत परम्पराओं का वह विरोध करता है अपनी स्वर्गवासी पत्नी की मधुर स्मृति में वह सोचता है कि किस प्रकार सरसों के फूलों को देखकर उसकी पत्नी प्रसन्न हुई थी और उसे अपना गौना याद आ जाता है। सांस्कृतिक कार्यो के प्रति भी उसके मन में लगाव है। भारतीय गाँवों में किस प्रकार अतिथि सत्कार किया जाता है इसका वर्णन भी इस उपन्यास में किया गया है।

सामाजिक विद्रूपता भरी दृष्टि लेकर जीने वाले के रुप में नित्या बाबू है। उसके कपिल और माया की शादी पसंद नहीं है। उसकी इस रुढीगत दृष्टि को बाबा नागार्जुन ने इस प्रकार बताया हैः–

''हे रावणेश्वर बम्भोलेनाथ यह कैसा ज़माना आया है। जात–पाँत, धर्म–कर्म पर संकट ही मँडराता चला जा रहा है। कल के छोकरे हम बूढ़ों की नाक में कोड़ी बाँध रहे हैं। घर के लड़के तक बात नही मानते है..... अच्छा हो कि दुःखमोचन हमारा गला घोंट दे।'' (7)

निष्कर्ष – हिन्दी साहित्य के प्रगतिवादी कवि नागार्जुन का नाम हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। उनके उपन्यासों में सर्वहारा वर्ग का चित्रण दिल को छू जाने वाला है। नागार्जुन की दृष्टि में देश और जनता का हित सर्वोपरि है। नागार्जुन हिन्दी साहित्य के एक ऐसे कवि हैं जिन्होने सामाजिक विषमताओं को स्वंय भोगा। उनके उपन्यास लोकतांत्रिक विविधताओं जैसे– रीति–रिवाज, खान–पान, रहन–सहन आदि से ओत–प्रोत हैं। उन्होने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराईयों, भ्रष्टाचार गरीबी, लाचारी, अंधविश्वास, आडम्बरो जैसी बढ़ती अनेक सामाजिक अनैतिक विसंगतियों पर निरन्तर प्रहार किया। उनके उपन्यास अपने समय के प्रामाणिक दस्तावेज़ हैं। नागार्जुन के साहित्य में युग–युग से शोषित–पीड़ित मनुष्यों किसानो, मजदूरो की वेदना को प्रमुखता मिली है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 06, June 2023

नागार्जुन ने पीड़ित जनों पर होने वाले अत्याचार शोषण, अन्याय आदि के खिलाफ आवाज़ बुलंद की। बाबा नागार्जुन के उपन्यास जनहित और जगत के लिए प्राणवायु का काम करते हैं। उन्होंने भारत वर्ष के निम्न वर्गीय पात्रो को अपने उपन्यासों का विषय बनाया। उपेक्षित, दलित, असहाय लोगों का यथार्थवादी चित्रण किया है। इसलिए साहित्य जगत में बाबा नागार्जुन को सम्मानपूर्वक याद किया जाता रहेगा।

सन्दर्भ स्त्रोत –

1– आराधना – नागार्जुन की कविताओं में लोकसंस्कृति – पीअर – रिव्यूड रिसर्च जर्नल 17 अप्रैल 2016 (शोध–पत्र)[1]
2 – विजय बहादुर सिंह – नागार्जुन का रचना संसार – प्रथम संस्करण 1982 – प्रकाशन – वाणी प्रकाशन – अंतिका – नई दिल्ली – (पुस्तक)[2]
3 – कमलानंद झा – दबी दूब का रूपक – प्रकाशक – अंतिका प्रकाशन प्रा०लि० प्रकाशन वर्ष – 01 जनवरी 2023 (पुस्तक)[3]
4 – डॉ. आशुतोष राय – नागार्जुन का गद्य साहित्य – प्रकाशक – लोकभारती – प्रकाशन वर्ष 2006 (पुस्तक)[4]
5 – शोभाकान्त – नागार्जुन रचनावली – प्रकाशक – राजकमल प्रकाशन – नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष – 2003 (पुस्तक)[5]
6– नागार्जुन – रतिनाथ की चाची (उपन्यास) पृष्ठ सं0 18, प्रकाशक – राजकमल प्रकाशन– नई दिल्ली–1998
7– नागार्जुन – बलचनामा (उपन्यास) पुष्ठ सं0 86, प्रकाशक – किताब महल, 22ऐ–इलाहाबाद।
8– नागार्जुन – नई पौध (उपन्यास) पृष्ठ सं0 67 प्रकाशक – राजकमल प्रकाशन–नई दिल्ली–1998
9– नागार्जुन – बाबा बटेसरनाथ (उपन्यास) पृष्ठ सं0 33, प्रकाशक – वान्या पब्लिकेशन्स 3ऐ/127 अवास विकास हंसपुरम नौबस्ता, कानपुर–208021
10– नागार्जुन – बाबा बटेसरनाथ (उपन्यास) पृष्ठ सं0 69, प्रकाशक – वान्या पब्लिकेशन्स 3ऐ/127 अवास विकास हंसपुरम नौबस्ता, कानपुर–208021
11– नागार्जुन – बाबा बटेसरनाथ (उपन्यास) पृष्ठ सं0 73, प्रकाशक – वान्या पब्लिकेशन्स 3ऐ/127 अवास विकास हंसपुरम नौबस्ता, कानपुर–208021
12– नागार्जुन – बाबा बटेसरनाथ (उपन्यास) पृष्ठ सं0 92, प्रकाशक – वान्या पब्लिकेशन्स 3ऐ/127 अवास विकास हंसपुरम नौबस्ता, कानुपर–208021